राजस्थान सरकार
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, राजस्थान राज्य स्वास्थ्य समिति
स्वास्थ्य भवन, जयपुर

F.No. F.21(3) /NHM/Deworming/2016/ 6363 Date : 19/1/16

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी,
समस्त राजस्थान।

विषयः जनवरी 2016 में आयोजित होने वाले "आशा दिवस" में राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस पर चर्चा करने बाबत्।

जैसा कि आपको विदित है कि दिनांक 10 फरवरी 2016 को राज्य सरकार द्वारा राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस (नेशनल डिवर्मिंग डे) एवं दिनांक 15 फरवरी 2016 को मोप–अप दिवस मनाया जा रहा है। इसमें 1 से 19 वर्ष के सभी बच्चों को आंगनबाडी केन्द्रों तथा विद्यालयों में एलबेन्डाजोल की दवा खिलाई जायेगी। जो बच्चे स्कूल नही जाते है, उनकी सूची सम्बन्धित क्षेत्र की आशा सहयोगिनी द्वारा तैयार कर उक्त दिवस को उन्हे प्रेरित कर निकटतम विद्यालय में ले जा कर दवा दिलवायेंगी। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में आशा सहयोगिनी की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। इसके लिये आशा सहयोगिनियों को उक्त कार्यक्रम की जानकारी देना अति आवश्यक है।

अतः आपको निर्देशित किया जाता है कि जनवरी 2016 में मनाये जाने वाले "आशा दिवस" में **राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस (नेशनल डिवर्मिंग डे)** को चर्चा का मुख्य बिन्दू बनाकर इस बारे मे विस्तार से चर्चा की जावे। जिलों में प्रचार–प्रसार सामग्री (IEC) के साथ भिजवायें गये आशा लीफलेट (प्रति संलग्न) के माध्यम से भी आशाओं को विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराया जाना सुनिश्चित करे ताकी डिवर्मिंग कार्यक्रम को जन–जन तक पहुँचाया जा सके। इसकी अनुपालना से 7 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता को तथा ई–मेल **wifs.raj @gmail.com** पर अवगत करायें।

संलग्नः– उपरोक्तानुसार

19/1/16

(डॉ. वी.के. माथुर)
निदेशक, आर.सी.एच.
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवायें,

wifs.raj@gmail.com

प्रतिलिपि निम्न को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है:—

1.निजी सहायक, मिशन निदेशक, एन.एच.एम. जयपुर।

2.परियोजना निदेशक (मातृत्व/शिशु स्वास्थ्य), एन.एच.एम. जयपुर।

3.जिला प्रजनन शिशु स्वास्थ्य अधिकारी, समस्त जिले, राजस्थान।

4.नोडल अधिकारी WIFS/ Deworming /Education/ICDS।

5.राज्य कार्यक्रम प्रबंध, एविडेंस एक्शनस।

6.पोषण अधिकारी, UNICEF

7.जिला कार्यक्रम प्रबन्धक/जिला आशा समन्वयक को वास्ते पालनार्थ।

8.कम्प्यूटर/सर्वर रूम को वास्ते ई—मेल।

9.रक्षित पत्रावली।

9.1.16

निदेशक, आर.सी.एच.
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवायें,

राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस

10 फरवरी 2016

आशा के लिए जानकारी पत्र

सामुदायिक जागरूकता में आशा की अहम भूमिका

1. समुदाय को कृमि नियंत्रण के लाभ एवं राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस की तिथि **10 फरवरी 2016** के बारे में बताएं और सभी को प्रोत्साहित करें कि बच्चों को इस दिन स्कूल/आंगनवाड़ी केन्द्र अवश्य भेजें।
2. जो बच्चे राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस पर किसी भी कारण से छूट जाएं उन्हें यह दवाई **15 फरवरी 2016** मॉप–अप दिवस पर लेने के लिए प्रेरित करें।
3. कार्यक्रम से पूर्व अपने क्षेत्र में गृह भ्रमण के समय 1–6 साल के सभी गैर पंजीकृत बच्चों की सूची तैयार कर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता को दें और 6–19 साल के सभी स्कूल ना जाने वाले बच्चों की सूची तैयार करें और पास के सरकारी स्कूल के प्रधानाध्यापक को दें।
4. अधिक से अधिक स्कूल ना जाने वाले और गैर पंजीकृत बच्चों को पास के सरकारी स्कूल व आंगनवाड़ी के माध्यम से इस कार्यक्रम का लाभ दिलाने में सहयोग करें।
5. ग्राम पंचायत एवं वी.एच.एन.डी बैठक द्वारा समुदाय के लोगों को कृमि नियंत्रण के लाभ एवं कार्यक्रम तिथि के बारे में जागरूक करें।
6. समुदाय को सूचित करें कि कृमि नियंत्रण कार्यक्रम सम्बंधित मीडिया संदेश रेडियो, अखबार व टी.वी. आदि द्वारा प्रचारित किये जायेंगे उन्हें ध्यान से सुने/देखें।
7. कृमि नियंत्रण के लाभ और उससे जुड़ी संपूर्ण जानकारी अपने आंगनवाड़ी केन्द्र पर आए बच्चों और उनके माता–पिता/अभिभावकों को अवश्य बताए। उन्हें बताए की यह दवाई सभी बच्चों को देना आवश्यक है।
8. माता–पिता/अभिभावकों को बताए कि यह दवाई बच्चों और बड़ों के लिए **सुरक्षित** और **लाभदायक** है।

कृमि कैसे फैलता है

1. संक्रमित बच्चे के शौच में कृमि के अंडे होते हैं। खुले में शौच करने से ये अंडे मिट्टी में मिल जाते है और विकसित होते हैं।

2. अन्य बच्चे नंगे पैर चलने से, गंदे हाथों से खाना खाने से या फिर बिना ढ़का हुआ भोजन खाने से, लार्वा के संपर्क में आने से संक्रमित हो जाते हैं।

3. संक्रमित बच्चों में कृमि के अंडें व लार्वा रहते है और बच्चों के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाते हैं।

कृमि संक्रमण का बच्चों की सेहत पर असर

• कुपोषण • खून की कमी (एनीमिया) • भूख न लगना
• बेचैनी • पेट में दर्द व सूजन • उल्टी और दस्त
• मल में खून आना

- कृमि की जितनी अधिक मात्रा (तीव्रता) होगी, संक्रमित बच्चों में लक्षण उतने अधिक होंगे
- हल्के संक्रमण वाले बच्चों में आम तौर पर कोई लक्षण दिखाई नहीं देते

बच्चों में कृमि नियंत्रण के फायदे

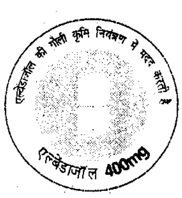

- खून की कमी में सुधार
- बेहतर पोषण स्तर
- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद
- स्कूल और आंगनवाड़ी में उपस्थिति तथा बच्चों में सीखने की क्षमता में सुधार
- भविष्य में कार्य क्षमता और औसत आय में बढ़ोतरी
- समुदाय में अन्य सदस्यों को भी कृमि नियंत्रण दवा का लाभ मिलता है क्योंकि वातावरण में कृमि की संख्या कम हो जाती है।

कृमि नियंत्रण की दवाई खाने के साथ-साथ कृमि संक्रमण की रोकथाम के लिए महत्वपूर्ण व्यवहार

खुले में शौच न करें, हमेशा शौचालय का प्रयोग करें

अपने हाथ साबुन से धोए, विशेषकर खाने से पहले और शौच जाने के बाद

जूते-चप्पल पहनें

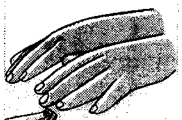

नाखून साफ और छोटे रखें

हमेशा साफ पानी पीयें। खाने को ढ़क कर रखें

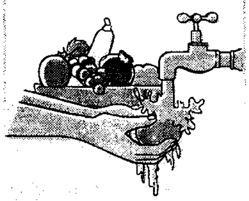

साफ पानी में फल व सब्जियाँ धोएं

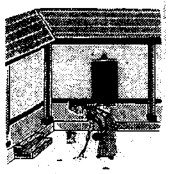

आस पास सफाई रखें

इन व्यवहार के बारे में समुदाय के लोगों, माता-पिता और बच्चों को नियमित रूप से जानकरी दें।

यह दवाई बच्चों और बड़ो सभी के लिए सुरक्षित है।

1. जो बच्चे बीमार हैं, या कोई अन्य दवाई ले रहे हैं, उन्हें कृमि नियंत्रण की दवाई नहीं दी जाती है।
2. ध्यान दें कि बच्चे गोली चबाकर, पानी के साथ लें।
3. जिन बच्चों में अधिक मात्रा में कृमि होते हैं, उन्हें दवाई देने पर पेट में हल्का दर्द और थकान महसूस हो सकती है। यह मामूली साइड इफेक्ट्स हैं, जो कुछ समय में ठीक हो जाते हैं और आम तौर पर स्कूल/आंगनवाड़ी केन्द्र में आसानी से संभाले जा सकते हैं।
4. किसी भी आपातकालीन स्थिति में नज़दीकी स्वास्थ्य केन्द्र से संपर्क करें या 108 पर फोन करें।

बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक और निर्देशानुसार भागीदार बनें।

unicef
Evidence Action
Deworm the World Initiative